Original Research Paper Education

छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिलें में नवा जतन योजना की प्रभावशीलता का मूल्यांकन

डॉ. मनदीप खालसा	प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), बी.सी.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)
कु. शीतल सोनकर	शोधार्थी,शोध केन्द्र, बी.सी.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

KEYWORDS

संक्षेप सार :-

कुपोषण पर नियंत्रण करके विश्व अर्थव्यवस्था के तीसरे देशों में शिशु मृत्यु दर, नवजात मृत्यु दर तथा मातृत्व मृत्यु दर को कम किया जा सकता हैं। कुपोषण का सबसे निचला स्तर नवजात मृत्यु दर में वृद्धि के कारको को बढ़ाता हैं। उन नवजात व बच्चों की अपेक्षा जो पर्याप्त रूप से पोषित हैं। गर्भावस्था में तथा प्रसवोपरांत माताओं में कुपोषण बच्चों में कुपोषण का एक प्रमुख कारण हैं। महिलाओं में कुपोषण का स्तर युगों से चली आ रही लिंग भेदभाव और असमानता हैं। समुदाय में महिलाओं और बच्चों की स्थिति सर्वाधिक निम्न स्तर पर पायी जाती हैं। जो कि पोषण स्तर को बनाये रखने के लिए एक गंभीर चुनौती हैं। इसके समुचित विकास के लिए पौष्टिक आहार पहली प्राथमिकता हैं, जो स्वास्थ्य और संतुलित जीवन के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों ही दृष्टि से पर्याप्त होनी चाहिए। इनकी पोषण संबंधी आवश्यकता की पूर्ति हो सकें तभी ये अपना स्वास्थ्य संतुलित एवं विकास सुनिश्चित कर पायेंगें।

प्रस्तावना :- नवा जतन कार्यक्रम राज्य में ०१ जनवरी २०१२ से संचालित हैं। नवाजतन राज्य के जनसंख्या में पारिवारिक एंव सामजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन से बच्चों में कुपोषण कम करने की महती योजना हैं। यह योजना एक राज्यव्यापी कार्यक्रम हैं, जिसमें आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं मितानिनों के द्वारा कुपोषण मुक्ति करने हेतु प्रयत्न किया जाता हैं। जिसमें परिवारों में घर भ्रमण कर स्वास्थ्य, पोषण शिक्षा देना हैं। परिवारों के घर में उपलब्ध पोषण संबंधी स्थानीय संसाधनो पर समझ विकसित कर तदानुसार परामर्श दिया जा सकें। 'ासकीय योजनाओं का समय से लाभ दिलाया जा सके। गरीबी एवं कुपोषण के कारण अच्छा जीवन स्तर ,अच्छा स्वास्थ्य स्तर अच्छी शिक्षा प्राप्त करना कठीन समस्या है। महिलाओं एवं बच्चों के समुचित विकास से ही एक अच्छे और सभ्य समाज की कल्पना की जा सकती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :-

१. कुपोषण दूर करना हैं।

२. स्वास्थ्य शिक्षा तथा पोषण शिक्षा देना हैं।

३. स्थानीय उपलब्ध खाद्य संसाधनों को अपनाना हैं।

अध्ययन का क्षेत्र एंव प्रविधि :- जिले में नवा जतन कार्यक्रम की सफलता और असफलता का मुल्यांकन करना हैं। प्रस्तुत 'ाोध पत्र द्वितीयक आकड़ों पर आधारित हैं ।

नवजतन चौथे चरण में धमतरी जिले में लक्षित बच्चों की संख्या २०१५.१६

2015.16	0.42 माह				43.60 माह				0.60 माह				:
	साम.न्य	मध्यम	गंभीर	योग	साम.न्य	मध्यम	गंभीर	योग	साम.न्य	मध्यम	गंभीर	योग	
धमतरी षहरी	344	123	85	552	117	118	26	261	461	241	111	813	56ण्7
धमतरी ग्र. ामीण	615	251	129	995	202	220	73	495	817	471	202	1490	54ण्8
कुरूद	813	572	239	1624	532	502	136	1170	1345	1074	375	2794	48ण्1
मग. रलोड	236	138	54	428	127	108	24	259	363	246	78	687	52ण्8
नगरी	849	443	230	1522	147	179	52	378	996	622	282	1900	52ण्4
मह. ायोग	2857	1527	737	5121	1125	1127	311	2563	3982	2654	1048	7684	51ण्8

तालिका के अध्ययन में पाया गया धमतरी 'हरी में नवाजतन योजना के अन्तर्गत ०.४२ माह के कुल ५५२ बच्चों में ८५ बच्चें गंभीर तथा १२३ बच्चे मध्यम कुपोषण में पाये गये। ४३.६० माह के बच्चों में २६ बच्चें गंभीर तथा ११८ बच्चें मध्यम कुपोषण में पाये गये। इसी प्रकार धमतरी ग्रामीण में ०.४२ माह के ६६५ बच्चों में १२६ बच्चें गंभीर तथा २५१ बच्चें मध्यम कुपोषित पाये गये। तथा ४३.६० माह के ४६५ बच्चों में से ७३ बच्चें गंभीर तथा २२० बच्चें मध्यम कुपोषण से ग्रसित पाये गये। कुरूद विकासखण्ड में ०.४२ माह के १६२४ बच्चों में २३६ बच्चें गंभीर कुपोषित तथा ५७२ बच्चें मध्यम कुपोषण में पाये गये। तथा ४३.६० माह के ११७० बच्चों में से १३६ बच्चें गंभीर कुपोषित तथा ५०२ बच्चें मध्यम कुपोषित पाये गये। मगरलोड विकासखण्ड में ०.४२ माह के ४२८ बच्चों में ५४ बच्चें गंभीर तथा १३८ बच्चे मध्यम कुपोषण से ग्रसित पाये गये। तथा ४३.६० माह के २५६ बच्चों में २४ बच्चें गंभीर तथा १०८ बच्चें मध्यम कुपोषित पाये गये। नगरी विकासखण्ड में ०.४२ माह के १५२२ बच्चों में ४४३ बच्चें मध्यम कुपोषित तथा २३० बच्चे गंभीर कुपोषण ग्रसित पाये गये। ४३.६० माह के ३७८ बच्चों में सें १७६ बच्चें मध्यम कुपोषित तथा ५२ बच्चें गंभीर कुपोषित पाये गये। अध्ययन से स्पष्ट हैं कि धमतरी में ०.४२ माह के ५१२१ बच्चों में से ७३७ गंभीर कुपोषित तथा ४३.६० माह के २५६३ बच्चों में से ३११ बच्चें गंभीर कुपोषित पाये गये।

धमतरी जिले में नवाजतन योजना के अन्तर्गत ०.६० माह के बच्चों का प्रतिशत

प्रतिषत में	0.42 माह	कुपोशित बच्चों का प्रतिषत	43.60 माह	कुपोशित बच्चों का प्रतिषत	0.60 माह	कुपोशित बच्चों का प्रतिषत
धमतरी षहरी	62ण्3	37ण्7	44ण्8	55ण्2	56ण्7	43ण्3
धमतरी ग्रामीण	61ण्8	38ण्2	40ण्8	59ण्2	54ण्8	45ण्2
कुरूद	50ण्1	48ण्9	45ण्5	54ण्5	48ण्1	51ण्9
मगरलोड	55ण्1	44ण्9	49ण्0	51	52ण्8	47ण्2
नगरी	55ण्8	44ण्2	38ण्9	61ण्1	52ण्4	47ण्6
महायोग	55ण्8	44ण्2	43ण्9	56ण्1	51ण्8	48ण्2

चित्र क्रमांक १.२ जिलें के विकासखण्डों में सर्वाधिक कुपोषित का प्रतिशत

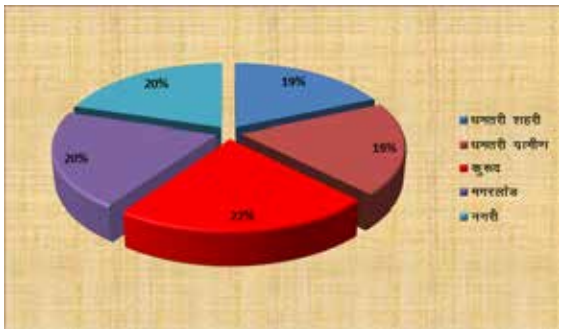

तालिका के अध्ययन में पाया गया धमतरी ग्रामीण में ०.४२ माह के ३७ण्७ प्रतिशत बच्चें कुपोषित पाये गये। ४३.६० माह के ५५ण्२ प्रतिशत बच्चे कुपोषित पाये गये। धमतरी ग्रामीण में ३८ण्२ प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं। तथा ४३.६० माह के ५६ण्२ प्रतिशत बच्चें कुपोषित हैं। इसी प्रकार कुरूद में ०.४२ माह के ४८ण्६ प्रतिशत बच्चें कुपोषण से ग्रसित तथा ४३.६० माह के ५४ण्५ प्रतिशत बच्चें कुपोषण से ग्रसित हैं। मगरलोड ब्लाक में ४४ण्६ प्रतिशत बच्चें ०.४२ माह के कुपोषित है, तथा ४३.६० माह के ५१ प्रतिशत बच्चें कुपोषित हैं। नगरी विकासखण्ड में ४४ण्२ प्रतिशत बच्चें तथा ४३.६० माह के ६१ण्१ प्रतिशत बच्चें कुपोषित पाये गये। अध्ययन से स्पष्ट हैं कि ०.४२ माह के ४४ण्२ प्रतिशत बच्चें अभी भी कुपोषण से ग्रसित हैं, तथा ४३.६० माह के ५६ण्१ प्रतिशत बच्चों को कुपोषण से दूर किया जाना हैं।

निष्कर्ष :- १. धमतरी ग्रामीण में ०.६० माह के कुल ५६ण्७ प्रतिशत बच्चे सामान्य श्रेणी में लाये गये हैं, तथा अभी भी ४३ण्३ प्रतिशत बच्चे कुपोषण से ग्रसित हैं।

२. धमतरी 'ाहरी में कुल ५४ण्८ बच्चें ही कुपोषण मुक्त हैं ,तथा ४५ण्२ प्रतिशत अभी भी कुपोषण से ग्रसित हैं।

३. कुरूद विकासखण्ड में ०.६० माह के सिर्फ ४८ण्१ प्रतिशत बच्चें ही सामान्य वजन वाले पाये गये। तथा ५१ण्६ प्रतिशत बच्चें कुपोषण से ग्रसित हैं।

४. मगरलोड विकासखण्ड में ०.६० माह के ५२ण्८ प्रतिशत बच्चे कुपोषण मुक्त हैं तथा वर्तमान में ४७ण्२ प्रतिशत बच्चें कुपोषित पाये गये।

५. नगरी विकासखण्ड में ०.६० माह के ५२ण्८ प्रतिशत बच्चों को कुपोषण से मुक्त किया गया हैं तथा ४७ण्६ प्रतिशत बच्चें वर्तमान में कुपोषण से ग्रसित पाये गये।

६. इस प्रकार धमतरी जिले में कुल ५१ण्८ प्रतिशत बच्चें ही कुपोषण से मुक्त हो पाये हैं तथा ४८ण्२ प्रतिशत बच्चें कुपोषित हैं।

सुझाव :- १. ०.०६ माह के बच्चों को केवल स्तनपान व्यवहार कराना चाहिए। शिशुवती माताओं को स्तनपान कराते समय कुछ न कुछ खाते रहना चाहिए ताकि उनके 'ारीर में जिन पोषक तत्वों की कमी हो रही हैं उसकी पूर्ति स्तनपान कराते समय होती रहें।

२. ०६ माह के बच्चों को केवल चावल , रोटी, दाल , सब्जी ही न खिलाएं बल्कि उन्हें प्रतिदिन बदल-बदलकर मौसमी सब्जियों, फलों तथा पत्तेदार भाजियों का सेवन करायें।

३. दुकानों में मिलने वाली पैकिंग फूड या जंक फूड से बच्चों को दूर रखे। उन्हें केवल घर पर बने भोजन का ही सेवन करायें।

४. जन्म के बाद हर बच्चें को ६० माह की आयु तक आंगनबाड़ी से मिलने वाली सुविधाओं का लाभ दिलाएं तथा उनके वजन व लंबाई/ऊचाई बढ़ रही हैं या नहीं निगरानी रखें।

५. यदि बच्चें का वजन/आयु अनुसार लंबाई/ऊचाई न बढ़ रहा हो तो स्वास्थ्य जांच से पता करें कि बच्चें में कोई संक्रमण तो नहीं। संक्रमण होने की स्थिति में उचित उपचार दे तथा ज्यादा गंभीर स्थिति होने पर पोषण पुर्नवास केन्द्र में दाखिला दिलाएं।

६. परिवारों को स्वास्थ्य और पोषण शिक्षा से होने वाले लाभों को बताएं तभी वे अपने घर परिवार में गर्भधारित महिलाओं को 'ारीरिक एवं मानसिक रूप से मजबूती प्रदान करेंगे।

७. गर्भधारण के दौरान होने वाली परेशानियों से अवगत कराये। तथा उन्हें हर परिस्थति में अतिरिक्त पोषण आहार लेने की सलाह दें। जिससे उनका स्वास्थ्य और पोषण स्तर ऊंचा होगा और वह स्वस्थ और पूर्ण विकसित बच्चें को जन्म दे सकेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :- १. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका अक्टुबर २००८।

2- डॉ. लक्ष्मीकांत ''आरोग्य विज्ञान तथा जनस्वास्थ्य'' किताब महल इलाहाबाद।

3- सतसंगी जी.डी.'' स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य '' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

4- डॉ. सक्सेना ैलेन्द्र ''आधुनिक जीवन ैली एवं बीमारियां '' जिज्ञासा पत्रिका २०१३-१४।

5- डॉ. जॉन ैला'' पोषण एवं आहार ''तमिलनाडु टेक्सबुक कार्पोरेशन्स चेन्नई।